



DR. KHADAR VALLI DUDEKULA

Dr. Khadar Valli Dudekula is popularly known as the Millet man of India. He has worked relentlessly for the past 25 yrs and has been successful in bringing back millet food to the consciousness of human race. Along with Millets, he is working to develop “sustainable living models” for the planet.

2. Born on 15th January, 1958, Dr. Khadar received his Bachelor of Science, Education and Master of Science Education degrees in 1979 and 1981 respectively and got his Ph.D in Steroid Biochemistry from Indian Institute of Science - Bengaluru. (1986-87). He then worked as - Post Doctrate Fellow in Oregon graduate Centre, Beaverton, Oregon, USA till 1991. He then joined CFTRI Mysuru, as Senior Scientist in Biochemistry and Nutrition Department. In 1993, he went to the US again to join CR&D at DuPont company Wilmington DE and worked as scientist in various departments till 1997. Realising that there was a need to redefine and change our food, he resigned his job and returned to India and worked as an Independent scientist to establish the role of Millets in preventing and curing modern day disease.

3. Dr. Khadar established Hasuru Hani Clinic and trained doctors to use food systems to heal people along with homoeopathic medicine. Since 25 years, he has actively been travelling to villages and cities across Karnataka, Andhra Pradesh and Telangana and from the past 5 yrs all across India, to spread awareness about millets as our staple grains and their importance in preventing and healing diseases and as the most Sustainable food for the future. He has been invited as a Speaker on Millets in USA, UAE and Nigeria.

4. Dr. Khadar has also trained thousands of farmers on rain fed agriculture called Jungle Krishi. Dry land farmers across India who were marginalised are now becoming economically sound as he brought demand for the villager's produce as super food across Indian cities.

5. Dr. Khadar is a recipient of several awards , amongst which Ahimsa Prashasti by Jain Samaj Mysuru (2015); Krishi ratna by Raitu Nestam Foundation (2021) and Nava Nakshatra by TV 9 (2021) are a few. Also, Honorary Doctrate has been conferred on him by SGT University Gurgaon in January, 2023.



डॉ. खादर वल्लि दूदेकुला

डॉ. खादर वल्लि दूदेकुला भारत के मिलेट मैन के नाम से विख्यात हैं। वह पिछले 25 वर्ष से लगातार इस क्षेत्र में सक्रिय हैं और मोटे अनाज के भोजन के प्रति जन चेतना जगाने में सफल रहे हैं। मोटे अनाजों के साथ, वह दुनियां में “सुस्थायी जीवन मॉडल” विकसित करने पर काम कर रहे हैं।

2. 15 जनवरी, 1958 को जन्मे, डॉ. खादर ने विज्ञान शिक्षा में स्नातक और स्नातकोत्तर उपाधि क्रमशः 1979 और 1981 में प्राप्त की और भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु से स्टेरॉयड बायोकेमिस्ट्री में पीएचडी (1986–87) की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद, उन्होंने ओरेगन ग्रेजुएट सेंटर, बीवरटन, ओरेगन, यूएसए में 1991 तक पोस्ट डॉक्टरेट फेलो के रूप में काम किया। इसके बाद, उन्होंने सीएफटीआरआई मैसूर में बायोकेमिस्ट्री और पोषण विभाग में वरिष्ठ वैज्ञानिक के रूप में कार्य किया। 1993 में, वे फिर से अमेरिका गए और वहाँ ड्यूपॉन्ट कंपनी विलमिंगटन डीई में सीआरएंडडी में 1997 तक विभिन्न विभागों में वैज्ञानिक के रूप में कार्य किया। उन्हें यह महसूस हुआ कि हमारे भोजन की समझ को पुनः परिभाषित करने और बदलने की आवश्यकता है। उन्होंने अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया और भारत लौट आए और एक स्वतंत्र वैज्ञानिक के रूप में आधुनिक समय की बीमारियों को रोकने और उनके उपचार में मोटे अनाजों की भूमिका के प्रचार के लिए काम किया।

3. डॉ. खादर ने हसुरु हनी क्लिनिक की स्थापना की और लोगों को ठीक करने के लिए होम्योपैथिक दवा के साथ-साथ खाद्य प्रणालियों का उपयोग करने हेतु डॉक्टरों को प्रशिक्षित किया। हमारे मुख्य अनाज के रूप में मोटे अनाजों के बारे में जागरूकता लाने और बीमारियों को रोकने और ठीक करने में उनके महत्व और भविष्य के सबसे स्थायी भोजन विकल्प के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए, पिछले 25 वर्षों से, वह सक्रिय रूप से कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के और पिछले 5 वर्षों से पूरे भारत के गांवों और शहरों की यात्रा कर रहे हैं। उन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात और नाइजीरिया में मोटे अनाजों पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया है।

4. डॉ. खादर ने हजारों किसानों को जंगल कृषि नामक वर्षा आधारित कृषि में प्रशिक्षित भी किया है। पूरे भारत में शुष्क भूमि पर खेती करने वाले सीमांत किसान अब आर्थिक रूप से मजबूत हो रहे हैं, क्योंकि उनके प्रयासों से भारतीय शहरों में सुपर फूड के रूप में ग्रामीण उपज की मांग बढ़ी है।

5. डॉ. खादर को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें जैन समाज मैसूर द्वारा अहिंसा प्रशस्ति (2015); रैतु नेस्तम फाउंडेशन द्वारा कृषि रत्न (2021) और टीवी9 द्वारा नव नक्षत्र (2021) शामिल हैं। साथ ही, जनवरी, 2023 में एसजीटी विश्वविद्यालय, गुड़गांव द्वारा उन्हें डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया है।